उपसंहार

उपसंहार

पद्माशा झा तथा सानिया की कहानियों का तुलनात्मक अनुशीलन करने के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए हैं । उनका निचोड यहाँ सार रुप में प्रस्तुत है -

'पद्माशा' तथा 'सानिया' का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व : तुलनात्मक अनुशीलन ।

डॉ. पद्माशा तथा सानिया जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के अध्ययन के पश्चात यह ज्ञात होता है कि डॉ. पद्माशा जी मुख्य रुप से कवयित्री के रुप में चर्चित एक सुघड़ एवं संवेदनशील कहानी लेखिका हैं । तथा सानिया जी का स्थान मराठी साहित्य जगत में अग्रस्थान पर लिया जाता हैं । वह एक आधुनिक एवं संवेदनशील लेखिका है दोनों की कहानियों का प्रारंभ अत्यंत बुद्धिमान और संवेदनशील नारी से शुरु होता है । अंत: वे दोनों भी नारीवादी लेखिका हैं । पद्माशा जी बिहार से है तथा सानिया जी महाराष्ट्र से है । पद्माशा जी का लेखन आधुनिक लेकिन परंपरा को संभालनेवाली नारी से शुरु होता है । तथा सानिया जी का लेखन आधुनिक नारी पारिवारिक रिश्तों में किस तरह जखड़ती जाती है इन पहलुओं से शुरुआत होती है ।

विवेच्य काहनीकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करने के बाद जों साम्य-वैषम्य द्रष्टव्य होते हैं - वे इसप्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया जी के लेखन का कालखंड एक ही है । दोनों ने भी सन् 1980 के बाद कहानी लिखना प्रारंभ किया ।
2. दोनों भी कहानी लेखिका के साथ-साथ कवयित्री भी हैं ।
3. दोनों के काहनियों की शुरुआत आधुनिक नारी से होती है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा जी हिंदी की लेखिका हैं ।
- सानिया जी मराठी लेखिका हैं ।
2. पद्माशा जी का जन्म 4 अप्रैल, 1948 का है ।
- सानिया जी का जन्म 10 नवंबर, 1952 का है ।

3. पद्माशा जी बिहार की हैं ।

- सानिया जी महाराष्ट्र से हैं ।

4. पद्माशा जी को पीएच. डी. उपाधि प्राप्त है ।

- सानिया जी एम्.कॉम्. हुई हैं ।

5. पद्माशा जी की पूरी पढ़ाई छात्रावास में रहकर हुई हैं ।

- सानिया जी की पढ़ाई जहाँ पिताजी का तबादला होता रहा, वैसे ही उनके छात्रावास बदलते गए ।

6. पद्माशा जी के पिता जमींदार थे ।

- सानिया जी के पिता मध्यवर्गीय थे और नौकरी करते थे ।

7. पद्माशा जी बिहार विश्वविद्यालय में प्रोफेसर होने के साथ-साथ वह बिहार विधान परिषद की सदस्य भी हैं ।

- सानिया जी गृहिणी हैं और सिर्फ लेखन करती हैं ।

8. पद्माशा जी को उनके उदास जिंदगी से लिखने की प्रेरणा मिली है ।

- सानिया जी को बदलते जीवनशैली से लिखने की प्रेरणा मिली हैं ।

9. सानिया जी को विविध पुरस्कारों से सन्मानित हैं ।

- पद्माशा जी को अभी तक कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं है ।

10. पद्माशा जी ने इतिहास विषय पर लेखन किया है ।

- सानिया जी ने ऐसा लेखन नहीं किया है ।

11. पद्माशा जी का विवाह घरवालों द्वारा तय करके हुआ है ।

- सानिया जी ने अंतरजातीय प्रेमविवाह किया है ।

विवेच्य कहानियों का कथ्य : तुलनात्मक अनुशीलन ।

द्वितीय अध्याय में मैंने विवेच्य कहानियों के कथ्य का तुलनात्मक अनुशीलन किया है । दोनों कहानी संग्रहों का अध्ययन करने पर मुझे प्रमुख दिखाई दिए गए कथ्य को नौ विभागों में विभाजन किया है । वे एस प्रकार हैं - दोनों कहानी संग्रहों में चित्रित कामकाजी नारी, हालात से समझौता करनेवाली नारी, घुटन में जीनेवाली नारी, वैवाहिक अस्थिरता से पीड़ित नारी, स्वतंत्र

अस्तित्व की कामना करनेवाली नारी, अंतरजातीय प्रेमविवाह से ग्रस्तनारी, धन की लालसा से पीड़ित नारी, अवैध-यौन संबंध रखनेवाली नारी, राजनैतिक खोखलापन से शोषित नारी आदि का तुलनात्मक अध्ययन किया हैं । अंत में दोनों कहानियों में निष्कर्ष रुप में जो साम्य-वैषम्य मिलते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. दोनों की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण चित्रित हैं ।
2. पद्माशा और सानिया, की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी का चित्रण परिलक्षित होता है ।
3. पद्माशा और सानिया, की कहानियों में घुटन में जीनेवाली नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।
4. पद्माशा और सानिया की कहानियों में अंतरजातीय विवाह का चित्रण मिलता है ।
5. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के अध्ययन के पश्चात स्पष्ट हो जाता है कि दोनों की कहानियों में वैवाहिक अस्थिरता का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं ।
6. पद्माशा तथा सानिया, की कहानियों में धन की लालसा का चित्रण परिलक्षित होता है ।
7. दोनों की कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की कामना रखनेवाली नारी चित्रित होती है ।
8. दोनों की कहानियों में अवैध यौन संबंधों का चित्रण परिलक्षित होता है ।

वैषम्य :

1. डॉ. पद्माशा की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण समाज के हर वर्ग से जुड़ा हुआ है ।

   \- सानिया की कहानियों में कामकाजी नारी का चित्रण सिर्फ उच्च वर्ग और मध्य वर्ग में ही चित्रित हुआ है ।

2. पद्माशा की कहानियों में समझौता करनेवाली नारी परिवार को बचाने के लिए जिंदगी से समझौता करती दिखाई देती है ।

   \- सानिया की कहानियों में नारी दिल से समझौता करती दिखाई देती है ।

3. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपने पति को परमेश्वर मानकर उसकी हर गलती नजर अंदाज करके खुद ही घुटन में जीती दिखाई देती है ।

- सानिया की काहनियों की नारियाँ सही को सही और गलत को गलत माननेवाली चित्रित होती है ।

4. पद्माशा की कहानियों में सिर्फ अंतरजातीय विवाह चित्रित हुआ है ।

- सानिया की कहानियों में अंतरदेशीय अंतरजातीय विवाह का चित्रण चित्रित है ।

5. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ अपने वैवाहिक जीवन में सिर्फ पति के कारण ही वैवाहिक अस्थिरता का शिकार बनी हुई द्रष्टव्य होती है ।

- सानिया की कहानियों में नारियाँ अस्थिर मन के कारण वैवाहिक अस्थिरता का शिकार बनी परिलक्षित होती है ।

6. पद्माशा की कहानियों में धन की लालसा के कारण नारी को जलाने का चित्रण परिलक्षित होता है ।

- सानिया की कहानियों में इस प्रकार का चित्रण नहीं मिलता ।

7. पद्माशा की कहानियों की नारियाँ विद्रोही नहीं दिखाई देती ।

- बल्कि इसकी तुलना में सानिया की कहानियों की नारियाँ अपने अस्तित्व के लिए विद्रोह का रुप धारण करती परिलक्षित होती हैं ।

8. पद्माशा की कहानियों में अवैध यौन संबंध रखने वाली नारी का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है ।

- सानिया की कहानियों में इसका अत्यल्प चित्रण मिलता है ।

9. पद्माशा की कहानियों में राजनीतिक खोखलेपन का चित्रण द्रष्टव्य होता है । प्रस्तुत पात्र के चित्रण में लेखक की प्रामणिकता और गहराई परिलक्षित होती है ।

- सानिया की कहानियों में राजनीति का चित्रण नहीं मिलता ।

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन : तुलनात्मक अनुशीलन ।

तृतीय अध्याय में विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है । दोनों कहानी संग्रह में चित्रित दांपत्य जीवन की सफलता तथा असफलता पर दृष्टि डाली गई है । पारिवारिक जीवन में स्थित शोषण, पीड़न, नारी की कर्मठता तथा कठोरता का यहाँ चित्रण किया गया है । नारी के सामाजिक जीवन की विवशता में नारी का घृणित तथा जागृत जीवन

का विवरण यहाँ किया गया है । नारी के आर्थिक स्थिति के अंतर्गत स्वावलंबी नारी तथा परावलंबी नारी का चित्रण किया गया है । अंत में दोंनो कहानी संग्रहों में जो साम्य-वैषम्य निष्कर्ष रुप में सामने आते हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्‌माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में दांपत्य जीवन के अंतर्गत सफल दांपत्य जीवन का चित्रण दिखाई देता है ।
2. दोनों की कहानियों में नारी के पारिवारिक जीवन में शोषित तथा पीड़ित नारी जीवन का चित्रण परिलक्षित होता हैं ।
3. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के पारिवारिक जीवन में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन का चित्रण दिखाई देता है ।
4. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के सामाजिक जीवन में नारी को विवश तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता हैं, यह दृष्टिगोचर होता है ।
5. दोनों की कहानियों में नारी के सामाजिक जीवन में जागृत नारी का चित्रण द्रष्टव्य होता हैं ।
6. पद्‌माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में स्वावलंबी नारी जीवन चित्रित दिखाई देता है ।
7. दोनों की कहानियों में नारी के आर्थिक जीवन में परावलंबी नारी जीवन दिखाई देता है ।

वैषम्य :

1. पद्‌माशा की कहानियों में सफल दांपत्य का चित्रण अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है ।
   - सानिया की कहानियों में पर्याप्त चित्रण दर्शित होता है ।
2. सानिया की कहानियों की नारी असफल दांपत्य जीवन का सहजता से स्वीकार करती दिखाई देती है ।
   - पद्‌माशा की कहानियों की नारी दिल से कमजोर दिखाई देती है ।
3. पद्‌माशा की कहानियों में निम्न वर्ग की नारी अपने मालिक द्‌वारा शोषित तथा पीड़ित दिखाई देती है ।
   - ऐसा चित्रण सानिया की कहानियों में नहीं है ।

4. पद्‌माशा की कहानियों में बच्चे के लिए माँ शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों में माँ के कारण बेटी शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती चित्रित होती हैं।

5. पद्‌माशा की कहानियों की नारी परिस्थितिवश कर्मठ तथा कठोर दिखाई देती है।

- सानिया की कहानियों की नारी स्वभाव से ही कर्मठ तथा कठोर दिखाई देती है।

6. पद्‌माशा की कहानियों की नारी मजबुरी में विवश तथा घृणित जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी समाज द्‌वारा बनाए गए नियमों का उल्लंघन करने के कारण विवश तथा घृणित नारी जीवन बिताती चित्रित होती है।

7. पद्‌माशा की कहानियों की नारी अन्याय के खिलाफ विद्रोही जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी समझदारी से जागृत जीवन बिताती चित्रित होती है।

8. पद्‌माशा की कहानियों की नारियों को आर्थिक मजबूरी ने स्वावलंबी बनाया है, यह द्रष्टव्य होता है।

- सानिया की कहानियों की नारियाँ अंतरिक प्रेरणा से स्वावलंबी बनी दिखाई देती हैं।

9. सानिया की कहानियों की एक नारी दुसरी नारी को स्वावलंबी बनाती द्रष्टव्य होती है।

- ऐसा चित्रण पद्‌माशा की कहानियों में नहीं दिखाई देता ।

10. पद्‌माशा की कहानियों में परावलंबी नारी जीवन का चित्रण पर्याप्त मात्रा में हुआ है।

- सानिया के कहानियों में परावलंबी नारी का चित्रण अत्यल्प मात्रा में हुआ है।

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याएँ : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रस्तुत अध्याय में मैंने विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित नारी जीवन की समस्याओं का तुलनात्मक अनुशीलन किया हैं । यहाँ नारी जीवन की विविध समस्याओं का चित्रण मिलता हैं । विवाह-विच्छेद की समस्या, अकेलेपन की समस्या, प्रेमविवाह की समस्या, बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या, स्त्री-पुरुष अनैतिक संबंधों की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, यौन समस्या, दहेज समस्या, मालिक द्‌वारा शोषण की समस्या का चित्रण यहाँ तुलनात्मक दृष्टि से

किया गया है । अंत में विवेच्य समस्याँओं को लेकर दोनों कहानी संग्रह में जों साम्य-वैषम्य दृष्टिगोचर हुए हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया दोनों की कहानियों में विवाह-विच्छेद समस्या दृष्टिगोचर होती है।
2. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों में नारी के अकेलेपन की समस्या क चित्रण दिखाई देता है।
3. दोनों की कहानियों की नारियाँ पति के विक्षिप्त स्वभाव के कारण अकेलेपन की समस्या की शिकार होती परिलक्षित होती है।
4. दोनों की कहानियों में नारी को पति द्वारा शादी जैसे बंधन से मुक्ति पाने के लिए छोड़कर जाने के कारण ही प्रेमविवाह एक समस्या का सामना करना पड़ता है।
5. दोनों की कहानियों के अध्ययन के पश्चात दोनों कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
6. दोनों की कहानियों में स्त्री-पुरुष अनैतिक संबंध की समस्या का चित्रण द्रष्टव्य होता है।
7. दोनों की कहानियों में पतिद्वारा अनैतिक संबंध रखने के कारण पत्नी को इस समस्या का सामना करना पड़ता दिखाई देता है।
8. दोनों की कहानियों में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण दृष्टिगोचर होता है।

वैषम्य :

1. पद्माशा के कहानियों की नारी विवाह-विच्छेद के बाद किसी आदमी का सहारा लेती दिखाई देती है।

- सानिया के कहानियों में ऐसा चित्रण नहीं दिखाई देता।

2. पद्माशा की कहानियों की नारी बच्चों के साथ नहीं रह सकती हैं इसीलिए अकेलापन सहती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों की नारी बच्चें साथ नहीं रहते इसीलिए अकेलापन सहती दिखाई देती है।

3. पद्माशा की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती हैं।

- सानिया की कहानियों में बच्चों के बिखरे जीवन की समस्या अत्यल्प मात्रा में चित्रित होती है।

4. पद्माशा की कहानियों में पिता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह चित्रण मिलता है।

- सानिया ती कहानियों में माता के अनैतिक संबंधों के कारण बच्चों का जीवन बिखर जाता हैं, यह चित्रण दिखाई देता है।

5. पद्माशा की कहानियों में नारी पति के दुर्व्यवहार के कारण अनैतिक संबंध रखती चित्रित होती है।

- सानिया की कहानियों में नारी स्वच्छंदी जीवन जीने की लालसा हेतु अनैतिक संबंध रखती चित्रित होती है।

6. पद्माशा की कहानियों में नारी को कुरुपता की वजह से अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता है यह चित्रित होता है।

- सानिया की कहानियों में नारी को पति-पत्नी के आयु में कई वर्षो का अंतर हो जाने कारण अनमेल विवाह की समस्या का सामना करना पड़ता हैं, यह चित्रित होता है।

7. सानिया की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण हुआ है।

- पद्माशा की कहानियों में यौन समस्या का चित्रण नहीं मिलता है।

8. पद्माशा की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण मिलता है।

- सानिया की कहानियों में दहेज समस्या का चित्रण ही नहीं मिलता।

9. पद्माशा की कहानियों में जमीदारों के शोषण की समस्या का चित्रण मिलता है।

- सानिया की कहानियों में इसका चित्रण मिलता नहीं है ।

विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प : तुलनात्मक अनुशीलन ।

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य कहानियों का रचना शिल्प की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । यहाँ कथावस्तु के परिप्रेश्य में दोनों कहानी संग्रहों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । दोनों कहानीसंग्रह में चित्रित पात्र एवं चरित्र की तुलना की गई है । संवाद एवं कथोपकथन के अंतर्गत दोनों कहानी संग्रहों की विशेषताओं का तुलनात्मक अनुशीलन किया है । दोनों कहानी संग्रहों में चित्रित वातावरण का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है । भाषा शैली के अंतर्गत दोनों के भाषागत एवं शैलीगत विशेषताओं का विवेचन किया गया है । दोनों कहानी संग्रहों के का तुलनात्मक अनुशीलन यहाँ किया गया है । अत: अध्याय के अंत में प्राप्त निष्

साम्य वैषम्य दिए गए हैं, वे इस प्रकार हैं -

साम्य :

1. पद्माशा तथा सानिया की कहानियों के रचना शिल्प में कथावस्तु दर्शित होती है ।
2. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से पात्र और चरित्र-चित्रण द्रष्टव्य होते हैं ।
3. दोनों की कहानियों का रचना शिल्प पात्र और चरित्र-चित्रण के माध्यम से लेखिकाओं ने अपनी इच्छा और रूचि के अनुसार उत्कृष्ट पद्धति से किया है ।
4. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से संवादों का चित्रण द्रष्टव्य है ।
5. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से अध्ययन के पश्चात वातावरण का चित्रण दोनों की कहानियों में द्रष्टव्य होता है ।
6. दोनों की कहानियों में भाषा-शैली के तत्त्व द्रष्टव्य होते हैं ।
7. दोनों की कहानियों की भाषा-शैली में मुहावरों का प्रयोग नहीं मिलता ।
8. दोनों की कहानियों में रचना शिल्प की दृष्टि से उद्देश्य का चित्रण द्रष्टव्य होता है ।

वैषम्य :

1. पद्माशा की कहानियों की कथावस्तु का प्रारंभ, उसका उत्कर्ष और अंत तीनों का विन्यास दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों में कथावस्तु प्रारंभ से ही अंत की ओर बढ़ती दिखाई देती है ।

2. पद्माशा की कहानियों के पात्रों का चित्रण वर्णनात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया है ।

- सानिया की कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक रचना शिल्प के प्रयोग द्वारा किया गया है ।

3. सानिया की कहानियों में रचनाशिल्प की दृष्टि से संवादों का चित्रण पर्याप्त मात्रा मे दिखाई देता है ।

- पद्माशा की कहानियों में संवादों का चित्रण अत्यल्प दर्शित होता है ।

4. पद्माशा की कहानियों में प्रकृति-सज्जा का चित्रण पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है ।

- सानिया की कहानियों में प्रकृति का अत्यल्प चित्रित है ।

5. पद्माशा की कहानियों की भाषा शैली पर बिहारी बोली का प्रभाव दिखाई देता है ।
- सानिया की कहानियों की भाषा शैली पर आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है ।
6. पद्माशा की कहानियों की भाषा शैली में गालियों का चित्रण दिखाई देता है ।
- सानिया की कहानियों में गालियों का चित्रण नहीं मिलता ।
7. पद्माशा की कहानियों में कथनात्मक शैली का प्रयोग मिलता है ।
- सानिया की कहानियों में मिश्रित शैली का प्रयोग मिलता है ।
8. पद्माशा की कहानियों में समाज के हर घटनाओं द्वारा समस्याओं से उद्देश्य को चित्रित किया है ।
- सानिया की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों की समस्याओं द्वारा उद्देश्य को चित्रित किया है ।

प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ :

1. दोनों लेखिकाओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
2. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दोनों कहानी संग्रहों का कथ्यात्मक विवेचन तुलनात्मक अनुशीलन द्वारा अभिव्यक्त किया गया है ।
3. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में नारी के यथार्थ जीवन का दोनों कहानी संग्रहों के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
4. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दोंनो कहानी संग्रहों के परिप्रेक्ष्य में नारी की समस्याओं का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।
5. दोनों कहानी संग्रह के रचनाशिल्प का तुलनात्मक अनुशीलन किया गया है ।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

डॉ. पद्माशा झा तथा सानिया की कहानियों के लेकर निम्नलिखित विषयों पर अनुसंदान किया जा सकता है ।

१. डॉ. पद्माशा झा तथा सनिया के जीवन, व्यक्तित्व तथा कृतित्व का तुलनात्मक अनुशीलन ।

२. डॉ. पद्माशा झा तथा सानिया के कहानियों में प्रस्तुत नारी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन ।